सूरह — एक कहानी

सूरह अल-फ़ातिहा

आग़ाज़

पूरा सफ़र — सब से अज़ीम सूरह, और एक उम्र की दुआ —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 1 • 7 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

बिस्मिल्-लाहिर्-रहमानिर्-रहीम
1. अल्लाह के नाम से, जो बेहद रहम वाला, निहायत रहम करने वाला है।

अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन
2. सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जहानों के रब।

अर्-रहमानिर्-रहीम
3. बेहद रहम वाला, निहायत रहम करने वाला।

मालिकि यौमिद्-दीन
4. बदले के दिन का मालिक।

इय्याक नअ्बुदु व इय्याक नस्त'ईन
5. हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।

इह्दिनस्-सिरातल्-मुस्तक़ीम
6. हमें सीधा रास्ता दिखा।

सब से अज़ीम सूरह

बेटा, हम पूरा क़ुरआन साथ साथ सफ़र कर चुके, आख़िर की छोटी सूरहों से ले कर सब से लंबी तक। और हम वहीं ख़त्म कर रहे हैं जहाँ से हर पढ़ने वाला शुरू करता है — **सात छोटी आयतों पर जिन्हें एक मुसलमान अपनी ज़िंदगी में किसी भी दूसरे अल्फ़ाज़ से ज़्यादा पढ़ता है।**

बेटा, पहले ये समझिए कि ये सूरह **है** क्या।

नबी ﷺ ने मस्जिद में एक सहाबी से फ़रमाया: **मैं तुम्हें मस्जिद से निकलने से पहले क़ुरआन की सब से अज़ीम सूरह सिखाऊँगा।** और आपने उनका हाथ पकड़ा, और जब वो बाहर क़दम रखने ही वाले थे, सहाबी ने आपको याद दिलाया। और आपने ﷺ फ़रमाया: **'अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन' — यही वो सात बार बार दोहराई जाने वाली आयतें और क़ुरआन-ए-अज़ीम है जो मुझे दिया गया।**

बेटा, **अल्लाह की किताब की सब से अज़ीम सूरह — और ये सात लाइन की है, और आपको पहले से ज़ुबानी याद है।**

और आपने ﷺ फ़रमाया: **उस शख़्स की कोई नमाज़ नहीं जो किताब का आग़ाज़ न पढ़े।**

बेटा, सोचिए इसका मतलब क्या है। **हर नमाज़ की हर रक'अत में, आपकी ज़िंदगी के हर दिन। अगर एक शख़्स पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ता है, तो वो ये सूरह दिन में कम से कम सत्रह बार पढ़ता है — साल में हज़ारों बार।**

अल्लाह ने एक हिस्सा चुना जो किसी भी दूसरे अल्फ़ाज़ से ज़्यादा दोहराया जाएगा जो कोई इंसान कभी कहेगा। ये जानना तो बनता है कि हम क्या कह रहे हैं।

और बेटा, इसके कई नाम हैं, और हर एक आपको कुछ बताता है: '**अल-फ़ातिहा**' — आग़ाज़। '**उम्मुल-किताब**' — किताब की माँ, क्योंकि पूरा क़ुरआन इसी से खुलता है। '**अस्-सब्'उल-मसानी**' — सात बार बार दोहराई जाने वाली। '**अश्-शिफ़ा**' — शिफ़ा। और रिवायात में है कि **इसे एक डसे हुए आदमी पर पढ़ा गया, और वो यूँ उठ खड़ा हुआ गोया वो कभी बीमार ही न था**, और नबी ﷺ ने फ़रमाया: तुम्हें कैसे पता चला कि ये रुक़्यह है?

और अब, बेटा, वो हदीस जो आपको ठीक ठीक बताती है कि जब आप इसे पढ़ते हैं तो क्या होता है।

नबी ﷺ ने बताया कि अल्लाह ने फ़रमाया: **मैंने नमाज़ को अपने और अपने बंदे के दरमियान दो हिस्सों में बाँट दिया, और मेरे बंदे के लिए वो है जो वो माँगे।**

जब बंदा कहता है '**अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन**', अल्लाह फ़रमाते हैं: **मेरे बंदे ने मेरी तारीफ़ की।**

जब वो कहता है '**अर्-रहमानिर्-रहीम**', अल्लाह फ़रमाते हैं: **मेरे बंदे ने मेरी सना की।**

जब वो कहता है '**मालिकि यौमिद्-दीन**', अल्लाह फ़रमाते हैं: **मेरे बंदे ने मेरी बुज़ुर्गी बयान की।**

जब वो कहता है '**इय्याक नअ्बुदु व इय्याक नस्त'ईन**', अल्लाह फ़रमाते हैं: **ये मेरे और मेरे बंदे के दरमियान है, और मेरे बंदे के लिए वो है जो वो माँगे।**

और जब वो बाक़ी हिस्सा कहता है, अल्लाह फ़रमाते हैं: **ये मेरे बंदे के लिए है, और मेरे बंदे के लिए वो है जो उसने माँगा।**

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। **हर एक बार जब आप नमाज़ में खड़े हो कर ये लाइन पढ़ते हैं, अल्लाह आपको जवाब दे रहे होते हैं, लाइन दर लाइन।**

बेटा, और अपने आप से ईमानदारी से पूछिए: **पिछली बार जब आप नमाज़ में खड़े थे, क्या आपको पता था कि हर जुमले के बाद एक जवाब आ रहा है?**

अल्लाह के नाम से

'**बिस्मिल्-लाहिर्-रहमानिर्-रहीम — अल्लाह के नाम से, जो बेहद रहम वाला, निहायत रहम करने वाला है।**'

बेटा, ये जुमला '**बि**' से शुरू होता है — **साथ**, या **के ज़रिए**। तो मतलब है: अल्लाह के नाम के साथ मैं शुरू करता हूँ, मदद माँगता हूँ, ये करता हूँ।

बेटा, **ये कुछ शुरू करने से पहले एक इक़रार है: मैं ये अपनी ताक़त से नहीं कर रहा।** और इसी लिए हम इसे खाने से पहले, सफ़र से पहले, लिखने से पहले, घर में दाख़िल होने से पहले कहते हैं।

'**अल्लाह**' — बेटा, ये उनका ज़ाती नाम है, **वो नाम जो किसी मख़्लूक़ को कभी न दिया गया।** उनका हर दूसरा नाम किसी सिफ़त का बयान है: रहम वाला, रिज़्क़ देने वाला, क़ुदरत वाला। **ये वाला ख़ुद वो हैं।**

'**अर्-रहमान**' और '**अर्-रहीम**' — दोनों 'रहमह', रहमत से, और दोनों बेहद शदीद। उलमा ने फ़र्क़ यूँ समझाया: '**अर्-रहमान**' ख़ुद रहमत की वुस'अत का बयान है — **उस का एक समंदर, हर मख़्लूक़ तक पहुँचता हुआ, मोमिन और मुंकिर, इंसान और जानवर, इस दुनिया में।** '**अर्-रहीम**' उस रहमत का बयान है जो अमल में आ कर पहुँचती है — **वो ख़ास, जारी रहने वाली रहमत जो वो मोमिनीन को देते हैं, ख़ास**

तौर पर आख़िरत में।

बेटा, और ग़ौर कीजिए: **अपने तमाम नामों में से जिन से वो अपनी किताब खोल सकते थे — ग़ालिब, मुंसिफ़, ज़बरदस्त — उन्होंने ये दो चुने। दो बार।**

बेटा, ये इत्तेफ़ाक़ नहीं। **पहली चीज़ जो आपका रब आपको अपने बारे में बताते हैं, हर चीज़ से पहले, ये है कि वो रहम करने वाले हैं।**

सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए

'**अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन — सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जहानों के रब।**'

बेटा, इसे खोल कर देखिए, क्योंकि इस में एक पूरी उम्र है।

'**अल-हम्द**' — अलिफ़-लाम के साथ इसका मतलब **सारी** तारीफ़ है, उसकी हर क़िस्म। और उलमा ने 'हम्द' को 'शुक्र' से अलग किया: **आप किसी का शुक्रिया उस चीज़ पर अदा करते हैं जो उसने आपके लिए की; मगर 'हम्द' उस चीज़ की तारीफ़ है जो कोई है, चाहे आपको कुछ मिला हो या नहीं।**

तो **ये आयत महज़ 'मेरी नेमतों का शुक्रिया' नहीं। ये है: तू ख़ुद अपनी ज़ात में तारीफ़ के लायक़ है।**

बेटा, और ग्रामर ग़ौर कीजिए: **ये ये नहीं कहती 'मैं अल्लाह की तारीफ़ करता हूँ'। ये कायनात के बारे में एक हक़ीक़त बयान करती है — कि सारी तारीफ़ अल्लाह ही की है। आप कहें या न कहें, वो उन्ही की है।** जब कोई एक ख़ूबसूरत इमारत की तारीफ़ करता है, तो तारीफ़ आर्किटेक्ट तक जाती है; **जब कोई वुजूद की किसी भी चीज़ की तारीफ़ करता है, तो वो उस ज़ात पर ख़त्म होती है जिसने उसे बनाया।**

'**रब्ब**' — बेटा, ये लफ़्ज़ 'मालिक' से कहीं बड़ा है। इस में **मालिक, आक़ा, पालने वाला, सँभालने वाला, वो जो किसी चीज़ को दर्जे ब दर्जे उठाए यहाँ तक कि वो मुकम्मल हो जाए** — सब शामिल है। इसी लिए एक माँ का बच्चे को पालना 'तर्बियह' है, उसी अस्ल से।

तो '**रब्बिल्-'आलमीन**' का मतलब है: **तमाम जहानों का मालिक और पालने वाला — हर आलम, मख़्लूक़ की हर क़िस्म, हर ज़माना, वो सब जो हम जानते हैं और वो सब जो हम नहीं जानते।**

बेटा, और तारीफ़ से शुरू करने में एक अहम बात है। **इस सूरह की तरतीब देखिए: उस से कुछ माँगने से पहले, आप उनकी तारीफ़ करते हैं। पूरी तीन आयतें इक़रार की पहली दरख़्वास्त से पहले आती हैं।**

बेटा, **यही दुआ का अदब है**, और इसी लिए नबी ﷺ ने सिखाया कि एक शख़्स को माँगने से पहले अल्लाह की तारीफ़ और अपने रसूल पर दुरूद से शुरू करना चाहिए।

रहम वाला, और उस दिन का मालिक

'**अर्-रहमानिर्-रहीम**' — और बेटा, ग़ौर कीजिए कि **ये दोनों नाम दोहराए गए हैं, 'जहानों के रब' के फ़ौरन बाद।**

इन्हें दोहराया क्यों गया? उलमा ने समझाया: **क्योंकि 'रब्ब' — आक़ा, मालिक — रोब और ख़ौफ़ पैदा कर सकता था। तो फ़ौरन, रहमत फिर बयान कर दी गई, ताकि आप जान लें कि आपका वास्ता किस क़िस्म के मालिक से है।**

'**मालिकि यौमिद्-दीन — बदले के दिन का मालिक।**'

बेटा, और अब तवाज़ुन। **रहमत के दो नामों के ठीक बाद ये याद-दहानी आती है कि एक हिसाब का दिन है, और उस के मालिक वो हैं।**

बेटा, देखिए ये सूरह आपको कैसे बनाती है। **रहमत, रहमत — फिर फ़ैसला। उम्मीद, फिर ख़ौफ़। कोई भी अकेला नहीं। वो शख़्स जो सिर्फ़ रहमत जानता है बे-परवाह हो जाता है; वो जो सिर्फ़ फ़ैसला जानता है मायूस हो जाता है। ये सूरह, दिन में सत्रह बार पढ़ी जा कर, आप में वो तवाज़ुन बार बार बनाती रहती है।**

और ग़ौर कीजिए '**मालिकि यौमिद्-दीन**' — ख़ास तौर पर **उस दिन** के मालिक। **वो हमेशा हर चीज़ के मालिक हैं, मगर उस दिन मिल्कियत पर कोई झगड़ा ही न होगा।**

आज लोग समझते हैं कि वो चीज़ों के मालिक हैं — अपने माल के, अपने ओहदों के, अपने जिस्मों के। उस दिन कोई ये दावा न करेगा।

बेटा, यहाँ '**अद्-दीन**' का मतलब **बदला** है, जो क़र्ज़ है उसका चुकाना। **हर अमल अपने करने वाले की तरफ़ लौटाया गया।**

तुझ ही से

और अब, बेटा, सूरह का दरमियान — वो धुरी जिस पर हर चीज़ घूमती है:

'**इय्याक नअ्बुदु व इय्याक नस्त'ईन — हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझ ही से मदद माँगते हैं।**'

बेटा, सब से पहली बात **अल्फ़ाज़ की तरतीब** देखिए। अरबी में आप आम तौर पर कहते 'नअ्बुदुक' — हम तेरी इबादत करते हैं। उसके बजाए मफ़'ऊल **आगे** लाया गया: '**इय्याक**' — **तुझे**, और फिर फ़े'ल।

अरबी में किसी लफ़्ज़ को यूँ आगे लाना **ख़ुसूसियत** पैदा करता है। तो मतलब है: **सिर्फ़ तेरी इबादत करते हैं, और सिर्फ़ तुझ से मदद माँगते हैं।**

बेटा, **वो एक ग्रामर का मोड़ ही पूरी तौहीद है। महज़ 'हम तेरी इबादत करते हैं' नहीं — ये तो एक मुश्रिक भी कह सकता था, दूसरों की इबादत के साथ साथ। बल्कि सिर्फ़ तेरी।**

और दोनों हिस्से ग़ौर कीजिए। **पहला वो है जो आप पर उनका हक़ है: इबादत। दूसरा वो है जिसकी आपको उन से ज़रूरत है: मदद।** बेटा, **चार लफ़्ज़ों में एक बंदे और उसके रब का पूरा रिश्ता — मेरा फ़र्ज़, और मेरी मोहताजी।**

और **तरतीब** ग़ौर कीजिए: **पहले इबादत, फिर मदद माँगना।** बेटा, **हम आम तौर पर इसे उलट देते हैं। हम उन के पास तब आते हैं जब हमें कुछ चाहिए। ये आयत सिखाती है: पहले इक़रार कीजिए कि आप उनके बंदे हैं, और फिर माँगिए।**

मगर बेटा, यहाँ इस से भी गहरी एक बात है, और ये आपका पूरा दीन समझने का अंदाज़ बदल देती है। इसे फिर पढ़िए: '**हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझ ही से**

मदद माँगते हैं।'

आप को उनकी इबादत करने के लिए मदद क्यों चाहिए? क्योंकि आप ये अपने बल पर कर ही नहीं सकते। आप उनके तौफ़ीक़ दिए बग़ैर नमाज़ तक नहीं पढ़ सकते। तो उसी साँस में जिसमें आप इबादत का अह्द करते हैं, आप मान लेते हैं कि आप इसे उन के बग़ैर निभा नहीं सकते।

बेटा, इसी लिए नबी ﷺ ने मु'आज़ (रज़ि0) से फ़रमाया कि वो उन से मोहब्बत करते हैं, और उन्हें हिदायत दी कि हर नमाज़ के आख़िर में ये कहना न छोड़ें: '**अल्लाहुम्म अ'इन्नी 'अला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि 'इबादतिक' — ऐ अल्लाह, मेरी मदद कीजिए कि मैं आपको याद करूँ, आपका शुक्र करूँ, और आपकी अच्छी इबादत करूँ।**

और अब एक और बात ग़ौर कीजिए, बेटा: '**नअ्बुदु**' और '**नस्त'ईन**' — **हम** इबादत करते हैं, **हम** माँगते हैं। **'मैं नहीं।**

आप रात के तीन बजे एक ख़ाली कमरे में अकेले खड़े हैं, और अल्फ़ाज़ फिर भी जमा हैं। क्योंकि आप कभी अकेले नमाज़ नहीं पढ़ रहे; आप एक ऐसी उम्मत के फ़र्द हैं जो ज़मीन के इर्द-गिर्द और सदियों में फैली हुई है। और इस लिए कि **एक मोमिन, अपने सब से निजी लम्हे में भी, अपने साथ दूसरों के लिए भी माँगता है।**

हमें रास्ता दिखा

'इह्दिनस्-सिरातल्-मुस्तक़ीम — हमें सीधा रास्ता दिखा।'

बेटा, **पूरी सूरह में ये पहली और वाहिद दरख़्वास्त है। इस से पहले सब कुछ तारीफ़ और इक़रार था, और इस के बाद सब कुछ इसी एक दरख़्वास्त की वज़ाहत है।**

अब सोचिए। **अल्लाह हमें सिखा रहे हैं कि उन से कैसे माँगें — और एक चीज़ जिसके माँगने की वो हमें ता'लीम देते हैं वो हिदायत है।**

सेहत नहीं। दौलत नहीं। सलामती नहीं, औलाद नहीं, कामयाबी नहीं। बेटा, इन सब का माँगना जायज़ है, और क़ुरआन ऐसी दुआओं से भरा हुआ है। **मगर जब अल्लाह**

ने ख़ुद वो दुआ तरतीब दी जो हम किसी भी दूसरी से ज़्यादा दोहराएँगे, तो उन्होंने उस में हिदायत रखी।

क्योंकि उस के बग़ैर बाक़ी हर चीज़ बे-क़ीमत है, और उस के साथ बाक़ी हर चीज़ उठाई जा सकती है।

बेटा, और यहाँ वो सवाल है जो लोग पूछते हैं: **मैं पहले से मुसलमान हूँ, मैं पहले से नमाज़ पढ़ रहा हूँ — तो मैं हिदायत क्यों माँग रहा हूँ?**

तीन जवाब, और तीनों सच हैं।

पहला: **हिदायत एक बार का वाक़िआ नहीं। ये एक मुसलसल रसद है, साँस की तरह। आपको हवा सिर्फ़ एक बार नहीं चाहिए। आपको आज हिदायत चाहिए, आज के फ़ैसलों में, आज की आज़माइशों में — और फिर कल।**

दूसरा: '**इह्दिना**' का मतलब है **हमें रास्ते तक पहुँचा और उस पर चला** — हमें राह दिखा **और** हमें उस पर चलते रख। **किसी सड़क के शुरू पर खड़ा होना उसके आख़िर तक पहुँचने जैसा नहीं।**

तीसरा, बेटा: **सीधा रास्ता महज़ आम तौर पर 'इस्लाम' नहीं। ये हर एक मामले में सही चीज़ है — आपके काम में दुरुस्त फ़ैसला, किसी बहस में सही अल्फ़ाज़, अपने बच्चों के साथ सख़्ती और नर्मी का दुरुस्त तवाज़ुन।** बेटा, **एक शख़्स मुसलमान हो सकता है और फिर भी रोज़ाना हज़ार चीज़ों में ग़लत हो सकता है, और उसे हर एक में हिदायत चाहिए।**

'**अस्-सिरात**' — बेटा, ये लफ़्ज़ एक **चौड़ी, साफ़, बड़ी सड़क** के लिए इस्तेमाल होता है, जो आपको वहाँ पहुँचाए जहाँ आप जा रहे हैं। और '**मुस्तक़ीम**' — **सीधा, जिसमें कोई मोड़ नहीं।** बेटा, **एक सीधी लकीर दो नुक़्तों के दरमियान सब से छोटा फ़ासला है; हर कज-रवी फ़ासला बढ़ाती है।**

और बेटा, नबी ﷺ ने ये अपने सहाबा के लिए खींचा: **एक सीधी लकीर, और दोनों तरफ़ से निकलती हुई लकीरें, और आपने फ़रमाया कि उन में से हर एक रास्ते पर एक शैतान उसकी तरफ़ बुला रहा है।**

तीन गिरोह

'सिरातल्-लज़ीन अन्'अम्त 'अलैहिम — उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम किया — ग़ैरिल्-मग़्ज़ूबि 'अलैहिम व लज़्-ज़ाल्लीन — उन का नहीं जिन पर ग़ुस्सा उतरा, न उन का जो भटक गए।'

बेटा, **अब रास्ते की ता'रीफ़ हो गई — किसी बयान से नहीं, बल्कि उस पर चलने वाले लोगों से।**

'**वो जिन पर तूने इनाम किया**' — और अल्लाह हमें क़ुरआन में कहीं और ठीक ठीक बताते हैं कि वो कौन हैं: **अंबिया, सिद्दीक़, शुहदा, और सालेहीन — और वो क्या ही अच्छे साथी हैं।**

बेटा, तो **जब आप ये कहते हैं, आप उस सुह्बत में रखे जाने की दरख़्वास्त कर रहे हैं। हर एक दिन, सत्रह बार, आप अल्लाह से माँग रहे हैं कि वो आपको उसी सड़क पर रखें जिस पर अंबिया थे।**

और फिर **दो खाइयों** का नाम लिया गया, सड़क की हर तरफ़ एक।

'**अल-मग़्ज़ूबि 'अलैहिम**' — **वो जिन्होंने ग़ुस्सा कमाया।** उलमा ने इन्हें ऐसे लोग बताया जो **हक़ जानते थे और उस पर अमल न किया। इल्म बिना अमल के।**

'**अज़्-ज़ाल्लीन**' — **वो जो भटक गए।** और ये वो लोग हैं जिन्होंने **इबादत की और मुख़्लिस हो कर कोशिश की, मगर बिना इल्म के — कोशिश बिना हिदायत के।**

बेटा, देखिए ये कितना ठीक है। **सीधे रास्ते से गिरने के बिल्कुल दो ही तरीक़े हैं।**

एक: **आप जानते हैं और अमल नहीं करते।** आप ईमानदारी वाली आयत पढ़ सकते हैं और अपने कारोबार में बे-ईमानी कर सकते हैं। आप हुक्म जान कर उसे नज़र-अंदाज़ कर सकते हैं। बेटा, **ये ख़तरा पढ़े-लिखों, दीनदारों, और उन लोगों के लिए है जिन्होंने इल्म हासिल किया।**

दो: **आप इख़्लास से अमल करते हैं मगर ग़लत।** आप ख़ुशू' और आँसुओं के साथ इबादत कर सकते हैं, और वो कभी मुक़र्रर ही न की गई थी। आप अच्छा चाहते हैं

और नुक़सान पहुँचा देते हैं। बेटा, **ये ख़तरा पुर-जोश और जज़्बाती लोगों के लिए है।**

और **सीधा रास्ता इन दोनों के दरमियान चलता है: इल्म जो अमल तक ले जाए, और अमल जो इल्म पर खड़ा हो।**

बेटा, इसी लिए हमारे उलमा ने कहा कि **ये सूरह, अपनी आख़िरी आयत में, पूरे दीन का तरीक़ा समेट लेती है।**

और फिर, बेटा, हम '**आमीन**' कहते हैं — जो सूरह का हिस्सा नहीं, मगर एक दुआ है जिसका मतलब है: **ऐ अल्लाह, क़ुबूल फ़रमा।** और नबी ﷺ ने फ़रमाया कि **जब इमाम 'ग़ैरिल्-मग़्ज़ूबि 'अलैहिम व लज़्-ज़ाल्लीन' कहे, तो 'आमीन' कहो, क्योंकि जिसका कहना फ़रिश्तों के कहने से मिल जाए, उसके पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।**

बेटा, इसका तसव्वुर कीजिए। **फ़रिश्ते आपके साथ 'आमीन' कह रहे हैं।**

हम कहाँ ख़त्म करते हैं

बेटा, इस सूरह की शक्ल एक बार और देखिए, क्योंकि **उसकी तरतीब ख़ुद एक सबक़ है।**

ये अल्लाह के नाम से शुरू होती है। फिर तमाम जहानों के रब के तौर पर उनकी तारीफ़। फिर उनकी रहमत। फिर उनका इंसाफ़, बदले के दिन के मालिक के तौर पर।

फिर, बिल्कुल दरमियान में, वो मोड़: उन के बारे में बात करने से उन से बात करने तक। 'हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझ ही से मदद माँगते हैं।'

और फिर, ये तय कर लेने के बाद कि वो कौन हैं और आप कौन हैं, वो दरख़्वास्त: हमें रास्ता दिखा।

बेटा, और ग़ौर कीजिए ये क़ुरआन को कहाँ रखता है। **ये सूरह एक दुआ है — एक बंदा माँग रहा है कि उसे रास्ता दिखाया जाए। और उस के फ़ौरन बाद क्या आता है? सूरह अल-बक़रह: 'ये वो किताब है, इस में कोई शक नहीं, अल्लाह से डरने वालों के लिए**

हिदायत।'

बेटा, **आप अल-फ़ातिहा में हिदायत माँगते हैं, और जवाब अगले ही सफ़्हे पर शुरू हो जाता है। पूरा क़ुरआन अल-फ़ातिहा की दुआ का जवाब है।**

तो बेटा, हम इस सफ़र के इख़्तिताम पर पहुँच गए। **हमने छोटी सूरहों से शुरू किया था — वो जो एक बच्चा सब से पहले याद करता है — और हम पूरी किताब में से गुज़रते हुए वापस उसके आग़ाज़ तक आ गए।**

और हम **सात लाइनों पर ख़त्म कर रहे हैं जो आप हज़ारों बार कह चुके हैं, और हज़ारों बार और कहेंगे।**

बेटा, इस सब के आख़िर में मेरी नसीहत सादा है। **उन सत्रह रोज़ाना तिलावतों को अपने ऊपर से पानी की तरह गुज़र मत जाने दीजिए।** जब आप कल खड़े हो कर 'अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन' कहें, तो याद रखिए कि **अल्लाह कहते हैं 'मेरे बंदे ने मेरी तारीफ़ की'।**

जब आप 'इय्याक नअ्बुदु व इय्याक नस्त'ईन' कहें, तो जान लीजिए कि उन्होंने फ़रमाया है: **ये मेरे और मेरे बंदे के दरमियान है, और मेरे बंदे के लिए वो है जो वो माँगे।**

और जब आप 'इह्दिनस्-सिरातल्-मुस्तक़ीम' कहें, तो **इसे यूँ माँगिए गोया आपकी ज़िंदगी इसी पर टिकी है। क्योंकि वाक़ई टिकी है।**

अल्लाह हमें उन में से बना दे जिन पर उसने इनाम किया, हमें जान कर अमल न करने से और बिना जाने अमल करने से बचाए, और हमें अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालेहीन के साथ जमा कर दे।

अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन — और यही जन्नत वालों का आख़िरी लफ़्ज़ है, तो इसी पर ख़त्म करना मुनासिब है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. क़ुरआन की सब से अज़ीम सूरह सात लाइन की है, और उस के बग़ैर कोई नमाज़

नहीं।

2. अल्लाह आपको लाइन दर लाइन जवाब देते हैं जब आप इसे पढ़ते हैं — 'मेरे बंदे ने मेरी तारीफ़ की', 'मेरे बंदे के लिए वो है जो वो माँगे'।

3. अपने तमाम नामों में से, उन्होंने अपनी किताब रहमत के दो नामों से खोली — और उन्हें दोहराया।

4. तारीफ़ दरख़्वास्त से पहले आती है: पहली माँग से पहले तीन आयतें इक़रार की।

5. 'इय्याक' का आगे रखा जाना मतलब सिर्फ़ तू — और इबादत के लिए मदद माँगना ये मानना है कि आप वो भी अपने बल पर नहीं कर सकते।

6. ये 'हम' कहती है, तब भी जब आप रात के तीन बजे अकेले हों — आप कभी अकेले नमाज़ नहीं पढ़ रहे।

7. वो एक दरख़्वास्त जिसे अल्लाह ने हमें सब से ज़्यादा दोहराना सिखाया वो हिदायत है — और सड़क के बग़ल की दो खाइयाँ हैं: जान कर अमल न करना, और बिना जाने अमल करना।

इह्दिनस्-सिरातल्-मुस्तक़ीम, सिरातल्-लज़ीन अन्'अम्त 'अलैहिम। आमीन।